विवाह से पहले कैकेयी महर्षि दुर्वासा की सेवा किया करती थीं। कैकेयी की सेवा से प्रसन्न होकर महर्षि दुर्वास ने कैकेयी का एक हाथ बज्र का बना दिया और आशीर्वाद दिया कि भविष्य में भगवान तुम्हारी गोद में खेलेंगे। समय का पहिया चलता रहा और कैकेयी का विवाह राजा दशरथ से हो गया। एक समय स्वर्ग में देवासुर संग्राम आरंभ हो गया। देवराज इंद्र ने राजा दशरथ को सहायता के लिए बुलाया। रानी कैकेयी भी महाराज की रक्षा के लिए सारथी बनकर देवासुर संग्राम में पहुंच गईं। युद्ध के दौरान दशरथजी के रथ के पहिये से कील निकल गया और रथ लड़खड़ाने लगा। ऐसे में कैकेयी ने कील की जगह अपनी उंगली लगा दी और महाराज की जान बचा ली।राजा दशरथ को जब पता चला कि कैकेयी ने युद्ध भूमि में किस साहस का परिचय दिया है तो वह वह बहुत प्रसन्न हुए और तीन वरदान मांगने के लिए कहा। कैकेयी ने उस समय प्रेमवश यह कह दिया कि इसकी जरूरत नहीं है अगर कभी जरूरत होगी तो मांग लूंगी। कैकेयी ने राजा दशरथ को इसी वरदान के जाल में फांस लिया और राम के लिए 14 वर्ष का वनवास मांग लिया। लेकिन 14 वर्ष के लिए वनवास क्यों मांगा इसके पीछे कई राज हैं।कैकेयी ने चौहद वर्ष का वनवास मांगकर यह समझाया कि अगर व्यक्ति युवावस्था में चौदह यानी पांच ज्ञानेन्द्रियाँ (कान, नाक, आंख, जीभ, त्वचा) पांच कर्मेन्द्रियां (वाक्, पाणी, पाद, पायु, उपस्थ) तथा मन, बुद्धि, चित और अहंकार को वनवास (एकान्त आत्मा के वश) में रखेगा तभी अपने अंदर के घमंड और रावण को मार पाएगा।